बेरोजगारी

बेरोजगारी एक सामाजिक अभिशाप है। किसी भी देश के लिए बेरोजगारी की समस्या एक गंभीर तथा जटिल समस्या है। भारत में बेरोजगारी गरीबी की तरह एक अभिशाप है। यदि आर्थिक विकास की गति को तीव्रता प्रदान करना है तो हमें गरीबी और बेरोजगारी का दुश्चक्र तोड़ना होगा। भारत में बेरोजगारी व्यापक रूप से फैली हुई है और समय के साथ निरंतर यह बढ़ती भी रही है। वस्तुतः बेरोजगारी का भारत में व्यापक विस्तार है। कोई भी क्षेत्र या वर्ग इससे मुक्त नहीं है।

बेरोजगारी का अर्थ कि जब देश में कार्य करनेवाली जनशक्ति अधिक होती है किंतु काम करने के लिए राजी होते हुए भी बहुतों को प्रचलित मजदूरी पर कार्य नहीं मिलता, तो उस विशेष अवस्था को बेरोजगारी की संज्ञा दी जाती है। ऐसे व्यक्ति जो मानसिक एवं शारीरिक दृष्टि से कार्य करने के योग्य और इच्छुक हैं परन्तु जिन्हें प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य नहीं मिलता उन्हें 'बेकार' या 'बेरोजगार' कहते हैं।

बेरोजगारी का स्वरूप :—

भारत एक विकासशील किन्तु अल्पविकसित देश है। इस कारण यहाँ बेरोजगारी का स्वरूप आँकड़ों की दृष्टि से उन्नत राष्ट्रों से भिन्न है। भारत में बेरोजगारी का स्वरूप संरचनात्मक किस्म की है। इसका अर्थ यह है कि श्रमिकों की संख्या की तुलना में रोजगार की मात्रा न केवल कम है, बल्कि यह कमी देश की अल्पविकसित अर्थव्यवस्था के साथ गहरे तौर पर जुड़ी हुई है। चूंकि देश में पूंजी निर्माण की दर नीची है। इसलिए रोजगार की मात्रा भी कम है।

प्रोफेसर केन्स के अनुसार — "जब कोई व्यक्ति प्रचलित वास्तविक मजदूरी से कम वास्तविक मजदूरी पर कार्य करने को तैयार हो जाता है, चाहे वह कम नकद मजदूरी स्वीकार करने के लिए तैयार न हो तब इस अवस्था को अनैच्छिक बेरोजगार कहते हैं।"

Scanned with CamScanner

* लार्ड कीन्स के अनुसार "किसी भी विकसित देशों में बेरोजगारी का मूल कारण सामर्थ मांग का अभाव है। अर्थात् ऐसी अवस्था में अर्थव्यवस्थाओं में मशीनें बेकार हो जाती है। और श्रम की मांग, उद्योगों के उत्पादन की मांग कम हो जाने के कारण गिर जाती है। लेकिन यहाँ यह उल्लेख करना उपयुक्त होगा की अल्पविकसित देशों में कीन्स के विचारों के अनुसार बेरोजगारी समर्थ मांग के अभाव से उत्पन्न नहीं होती बल्कि यह पूंजी या अन्य अनुपूरक साधनों के अभाव से उत्पन्न ~~नहीं होती बल्कि~~ होती है। विकसित देशों में बेरोजगारी की भिन्नता को ध्यान में रखते हुए संक्षेप में देश बेरोजगारी के स्वरूप को इस प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है।" भारत में बेरोजगारी व्यापक रूप से फैली हुई है और इसका स्वरूप दीर्घकालीक है।"

बेरोजगारी के प्रकार

मूलतः भारत में बेरोजगारी का स्वरूप संरचनात्मक है। किन्तु यह विभिन्न ~~स्वरूपों~~ रूपों में देखने को मिलती है भारत में बेरोजगारी के प्रकार निम्नलिखित है:—

- **प्रच्छन्न बेरोजगारी** → इसे छुपी हुई बेरोजगारी भी कहा जाता है। इस प्रकार की बेरोजगारी प्रायः ग्रामीण क्षेत्रों से कृषि कार्य से जुड़े हुए क्षेत्रों में देखने को मिलती है। यह फालतू या अनावश्यक श्रम जिसकी कृषि क्षेत्र में सीमांत उत्पादकता शून्य होती है, प्रच्छन्न बेरोजगारी कहलाती है।

- **अल्प-रोजगार** :— इसके अंतर्गत ऐसे श्रमिक आते है जो की उत्पादन कार्य में लगे हुए होते है लेकिन उनको उनकी क्षमता के अनुसार कार्य नहीं मिलता है। अर्थात् ऐसे श्रमिक जो उत्पादन में योगदान तो करते है लेकिन उतना नहीं जितना वो कर सकते है।"

Scanned with CamScanner

मौसमी बेरोजगारी :-

बहुत से श्रमिक ऐसे होते हैं जो पूरे वर्ष काम नहीं कर पाते हैं खासकर कृषि से संबंधित श्रमिक। जैसे फसल की कटाई के बाद और बुवाई से पहले। दूसरे शब्दों में भारत में बहुत से कृषकों को वर्ष में कुछ समय ही काम मिल पाता है और शेष समय में वो खाली या बेकार हो जाते हैं। इस प्रकार की बेरोजगारी को मौसमी बेरोजगारी कहा जाता है।

खुली बेरोजगारी :-

इस प्रकार की बेरोजगारी वह है जिसमें यद्यपि श्रमिक काम करने के लिए तैयार भी होता है तथा उसमें काम करने की योग्यता भी होती है परन्तु उसे काम नहीं मिलता है।

शिक्षित बेरोजगारी :-

ऐसे श्रमिक जिनके शिक्षण-प्रशिक्षण में बड़ी मात्रा में संसाधन इस्तेमाल किये जाते हैं और उनकी काम करने की क्षमता दूसरे श्रमिकों से अधिक होती है किन्तु उनको अपनी योग्यतानुसार काम नहीं मिलता उन्हें शिक्षित बेरोजगार कहते हैं।

औद्योगिक बेरोजगारी :-

इसके अंतर्गत उन व्यक्तियों को शामिल किया जाता है। जो खनिज, उद्योगों, यातायात, व्यापार निर्माण आदि व्यवसायों में काम करने के इच्छुक हैं, किन्तु उन्हें काम नहीं मिलता।

चक्रीय बेरोजगारी :-

यह बेरोजगारी व्यापार-चक्र के उस चरण से उत्पन्न होती है, जबकि व्यापार क्षेत्र में मन्दी की स्थिति आती है।

संरचनात्मक बेरोजगारी :-

संरचनात्मक बेरोजगारी वह स्थिति है जो देश की आर्थिक संरचना में परिवर्तन होने के कारण उत्पन्न होती है।

~~संघर्षनात्म~~ संघर्षात्मक बेरोजगारी :-

इस प्रकार की बेरोजगारी श्रमिकों की गतिशीलता में बाधा के कारण उत्पन्न होती है।

Scanned with CamScanner